मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति -
(Obsessive - Compulsive Disorders or OCD) -

प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक मनोग्रस्तता एवं बाध्यता को दो भिन्न मानसिक रोग मानते थे लेकिन बाद के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि ये दोनों एक ही चिंता विकृति के दो रूप हैं। रोगी में कभी एक रूप की प्रधानता होती है तो कभी दूसरे रूप की ओर कभी-कभी समान रूप से दोनों रूपों की प्रधानता देखी जाती है। इस रोग के इन दोनों रूपों को अलग-अलग वर्णन किया जाएगा ताकि इस रोग को आसानी से समझा जा सके।

मनोग्रस्तता (Obsession) - मनोग्रस्तता एक ऐसी अवस्था होती है, जिसमें रोगी बार-बार किसी अतार्किक एवं असंगत विचारों को मन में दोहराते रहता है। रोगी ऐसे विचारों की अर्थहीनता, अतार्किकता एवं असंगतता को अच्छे से समझता है, फिर भी ये विचार उसके मन में बार-बार आकर उसकी मानसिक शांति को नष्ट करते हैं। रोगी ऐसे विचारों से छुटकारा भी पाना चाहता है, परन्तु वह इनसे छुटकारा पाने में खुद को असमर्थ पाता है।

Page के अनुसार - "मनोग्रस्तता वह विचार या आवेग है जो रोगी की इच्छा के प्रतिकूल अपने आप ही उसके मन में बार-बार उठता है।"

Fisher के अनुसार - "मनोग्रस्तता एक ऐसे विशिष्ट स्वरूप की मानसिक या आन्तरिक क्रिया है, जिसे व्यक्ति अतार्किक समझता है। लेकिन उस पर उसका कुछ नियंत्रण नहीं होता।"

Devison & Neale के अनुसार - मनोग्रस्तता अंतर्वेधी एवं पुनरावर्ती चिंतन, आवेग एवं प्रतिमाएँ होती हैं, जो मन में बिना बुलाये या स्वैच्छिक रूप से आती हैं और अनुभव करने वाले व्यक्ति के लिए असंगत एवं अनियंत्रित होती हैं।"

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से निम्नलिखित मुख्य

बातें स्पष्ट होती है —

→ मनोग्रस्तता एक मानसिक रोग है।

→ रोगी के मन में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यर्थ के • अतार्किक विचार या आवेग बार-बार आते हैं।

→ ये विचार रोगी के मानसिक शांति को भंग करते हैं। इनका रोगी के इच्छा से कोई संबंध नहीं रहता है।

→ रोगी का ऐसे विचारों या चिंतनों पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। जिससे वे व्यर्थ एवं अतार्किक क्रियाओं को करने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

प्रायः मनोग्रस्तता के विचार एवं चिंता का संबंध कुछ ऐसे विचारों से होता है, जिसका सही-सही उत्तर देना कठिन होता है। जैसे — सत्य क्या है? हमारे जन्म का उद्देश्य क्या है? आदि-आदि। मनोग्रस्तता का संबंध अत्यधिक शक, अनिर्णयता तथा टाल मटोल आदि से भी हो सकता है।

II बाध्यता (Compulsion) — बाध्यता के रोगी के अन्दर यह प्रबल प्रेरणा बनी रहती है कि वह किसी संस्कारजन्य कार्य को बार-बार करे। यही कारण है कि इसमें रोगी अपनी इच्छा के विरुद्ध भी कुछ कार्यों को बार-बार करता रहता है। जैसे — रुपये गिनना, बार बार हाथ धोना, [illegible] निकालना, किसी चीज को चुराने की बाध्यता आदि। ऐसी क्रियाएँ अवांछित ही नहीं बल्कि अतार्किक एवं असंगत भी होती हैं।

[illegible]

Fisher के अनुसार — "बाध्यता एक ऐसे विशिष्ट स्वरूप की बार-बार होने वाली बाध्य क्रिया है जिसे व्यक्ति उस परिस्थिति में, जिसमें वह क्रिया होती है, अतार्किक एवं असंगत समझता है लेकिन उस पर उसका कुछ भी नियंत्रण नहीं होता।"

Kisker के अनुसार — "मनोग्रस्तता जब कार्य में बदल दिये जाते हैं, तो बाध्यता कहा जाता है। बाध्यता से ग्रसित व्यक्ति एक ही कार्य को बार-बार करते हैं, हालांकि वे यह महसूस करते हैं कि ऐसा करने का कोई अर्थ नहीं होता

Devison & Neale के अनुसार — "बाध्यता एक आवृति व्यवहार है जिसे व्यक्ति अपनी व्यथा को कम करने के लिए तथा कुछ संकट या विपत्ति को रोकने के ख्याल से करने के लिए बाधित अनुभव करता है।"

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से निम्नलिखित मुख्य बातें स्पष्ट होती हैं—

→ बाध्यता एक मानसिक रोग है।
→ इसमें रोगी एक ही क्रिया को बार-बार करता है।
→ यह क्रिया अतार्किक एवं असंगत भी होती है।
→ रोगी का इन क्रियाओं पर कोई नियंत्रण नहीं होता है।

कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती है जिसमें मनोग्रस्तता तथा बाध्यता के बीच स्पष्ट रेखा नहीं होती है। White & Cole के अनुसार — कुछ मनोग्रस्त विचार का स्वरूप ऐसा होता है जो रोगी में चिंता तो कम उत्पन्न करता है परंतु वह बाध्यता व्यवहार जैसा कार्य करता है। जैसे— कभी-कभी व्यक्ति किसी चिंता से बचने के लिए मन-ही-मन कुछ जाप बार-बार करता है या फिर गिनती गिनते रहता है। इसे संज्ञानात्मक बाध्यता (Cognitive compulsion) कहा जाता है।

इसप्रकार, यह कहा जा सकता है कि मनोग्रस्तता-बाध्यता विकृति में मानसिक तनाव की प्रधानता रहती है। वे तीव्र बुद्धि एवं संवेदनशील तो होते हैं, परंतु आदर्शवादी, धार्मिक एवं आत्म-ग्लानि से पीड़ित रहते हैं। वे जानते हैं कि उनके विचार तथा कार्य अतार्किक तथा असंगत हैं, फिर भी वे उन्हें छोड़ने में असमर्थ रहते हैं। मनोग्रस्तता में क्रियाएँ बोधात्मक स्वरूप की होती हैं, जिनका प्रकाशन मानसिक स्तर पर होता है। परन्तु बाध्यता में क्रियाएँ कार्यात्मक होती हैं जिनका प्रकाशन एक विशेष कार्य के रूप में होता है। यही कारण है कि इस विकृति को मनोग्रस्तता-बाध्यता विकृति कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

OCD के कारण (Etiology of OCD) —

OCD के कारणों को स्पष्ट करने के लिए कई सिद्धान्तों या कारकों का वर्णन किया गया है, जो निम्नांकित हैं

- जैविक कारक (Biological factors)
- मनोविश्लेषिक कारक (Psychoanalytic factors)
- व्यवहारात्मक कारक (Behavioural factors)
- संज्ञानात्मक कारक (Cognitive factors)

→ **जैविक कारक** — अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि OCD की उत्पत्ति में जैविक कारकों की अहम भूमिका होती है। McKeon & Murray ने अपने अध्ययन में पाया कि OCD के रोगियों के संबंधियों में चिंता विकृति अधिक होती है। अन्य अध्ययनों में यह पाया गया कि करीब 30% संबंधियों में OCD का रोग पाया अर्थात् OCD के उत्पत्ति में अनुवांशिकता की भी भूमिका है। Jenike ने अपने अध्ययन से बताया कि OCD उत्पन्न होने में सिर में चोट, मस्तिष्कीय ट्यूमर, encephalities आदि की भी अहम भूमिका होती है। Rapoport ने एक केस में यह बतलाया कि एक आठ वर्ष का बच्चा जिसे मस्तिष्क में चोट लगी थी का आपरेशन किया गया और बाद में उसमें बाध्यता विकसित हो गयी जिसमें वह प्रत्येक चीज को सात बार गिनता था, स्नान सात बार करता था, सात बार अपना नाम लेता था आदि आदि।

→ **मनोविश्लेषिक कारक** — इसके अनुसार जब अवांछनीय एवं अचेतन के चिंतन जो दमित रूप में अचेतन में होते हैं, चेतन में आने का प्रयास करते हैं, तो व्यक्ति इससे बचने का उपाय ढूँढता है और सुरक्षात्मक उपाय के रूप में वह OCD के लक्षणों को विकसित कर लेता है। इस सुरक्षात्मक प्रक्रिया के रूप में वह विस्थापन तथा प्रतिस्थापन का उपयोग करता है।

इस सिद्धान्त से यह भी पता चलता है कि जिन व्यक्तियों को कुछ विशेष अचेतन संघर्ष होते अपने

बच्चों या मित्रों - संबंधियों को हानि पहुँचाने से संबंधित विचार आते हैं, उनमें भी OCD उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है। OCD के रोगियों के लक्षणों से भी यह संकेत मिलता है कि उसके भीतर किस तरह का संघर्ष चल रहा है।

→ **व्यवहारपरक कारक** — इसके अनुसार OCD को एक सीखा गया विकृति माना गया है, जो विशेष परिणामों से पुनर्बलित होता है। जैसे — बार-बार हाथ धोने के व्यवहार को एक क्रियाप्रसूत पलायन अनुक्रिया माना गया है, जो गंदगी या जीवाणु से दूषित हो जाने की मनोग्रस्ति चिंतन को कम करता है। इसी तरह कुछ रोगियों में बाध्यित चेक करने का व्यवहार उत्पन्न हो जाता है, जो रोगी के उस चिंता को कम करने में मदद करता है, जिसे वह मानता है कि ऐसा न करने पर बहुत बड़ी दुर्घटना हो जाएगी। जैसे - ताला बंद करने के बाद उसका बार-बार चेक करना।

→ **संज्ञानात्मक कारक** — इसके अनुसार जब व्यक्ति किसी ऐसी परिस्थिति में होता है, जिसमें कुछ अवांछनीय या खतरनाक परिणाम उत्पन्न होने की थोड़ी भी संभावना होती है, तो व्यक्ति इस तरह के परिणाम का अति आंकलन (over estimate) करता है, जिससे उसमें OCD के लक्षण उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। व्यक्ति में अतिआंकलन का संज्ञानात्मक स्तर उसे उस तरह की परिस्थिति से दूर हटने की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है, और उसमें OCD के उत्पन्न होने की संभावना में तीव्र वृद्धि कर देता है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि OCD के उत्पन्न होने के लिए कई कारक जिम्मेदार हो सकते हैं। जिनका सही-सही अनुमान लगाना एक कठिन कार्य होता है।